IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

डा. मंजु सांगवान

पद :– एसोसिएट प्रोफसर हिंदी विभाग

(महिला महाविद्यालय चरखी दादरी)

लोक गीतों में समाहित है हरियाणवी संस्कृति

संस्कृति कोई भी हो, वो एक क्षेत्र विशेष में सम्बंध रखती है। उस क्षेत्र विशेष के लोगों की रहन–सहन रीति–रिवाज, भाषा–बोली, आचार–विचार होता उस क्षेत्र विशेष को लोक संस्कृति कह सकते हैं। संस्कृति एक क्षेत्र विशेष लोक जीवन के लम्बे समय तक जीने के तौर–तरीके ही लोक संस्कृति कहलाते हैं, यहां की लोक संस्कृति का प्राचीन लिखित साहित्य कम है, पर पीढ़ी दर पीढ़ी लोक गीतों, सांगों, रागनियों और भजनों में देखी जा सकती है। धन–धान्य से परिपूर्ण हरियाणा की पहचान 'जित दूध दही का खाना, हरा भरा हरियाणा', हरियाणवी मेहमान नवाजी, मेहतकश व हर हाल में खुशी से रहने वाले हैं, हर बात में हाजिर नवाबी व मजाकिये अंदाज में बात करते है, यहां के चुटकले कहावतें, हर दुःखी मन का हंसने पर मजबुर कर देते हैं।

हरियाणा की लोक भाषा के कई रूप है। इनमें से मुख्य एवं केन्द्रीय बोली बांगरू है। इसके अतिरिक्त मोटै तौर पर हिसार जिले के पश्चिम में बागड़ी, गुडगांव जिले के पलवल में ब्रज तथा नूंह और फिरोजपुर– झिरका में मेवाती, रेवाड़ी, गुडगांव तथ मेहन्द्रगढ़ में अहीरवाटी तथा अम्बाला के इलाके के कौरवी या हिन्दूस्तानी बोलियां भी बोली जाती हैं। लोक साहितय की प्रचलित विधाओं में अधिकतर तौर पर पुरूष वर्चस्वि स्थापित है। लोकगीत ही एकमात्र ऐसी विधा है जिस पर पुरूषों का अधिकार न के बराबर है जिन्हे स्त्रियों की अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। लोकगीत को प्रदेश की सबसे प्रचलित विधा भी कहा जा सकता है जो संख्या में भी अन्य की तुलना में अधिक है। जन्म मृत्यु, विवाह–संस्कार, व्रत–उत्सव, रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, व्यवसाय

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

व सामाजिक सम्बन्धों के साथ–साथ ऐतिहासिक–पौराणिक किस्मों, राजनैतिक फेरबदल राष्ट्रीय आंदोलनों, धार्मिक आस्था आदि की अभिव्यक्ति, लोकगीतों में है।

ऋतु सम्बंधी गीत – सावन – झूलण जांगी ऐ मां मेरी बाग में री

आरी री कोए संग सुहेली च्यार

– नियां बा के निबोली लाग्यी सामणिये

कद आवेंगे हायरी भाई जौ मेरी

कोथली कद लायवैगी

– ये नन्ही – नन्ही बुंदियां जो मै तो सारी बिझगी।

इस सावन के गीतों में बारिश की जो बौछार गिरती है उससे प्रकृति एक नई अंगडाई लेनी है इसमें नव युवतियां इक्ठ्ठी होती है तथापि गर्मी से निजात पाकर शीतलता महसूस करती है और गीत गाती है प्रकृति से चारों ओर हरियाली प्रस्फूटि होने लगती है और इन लोकगीतों के माध्यम से नये रिश्तों का जुडाव होता और परम्पराओं व रितिरिवाज व लोकजीवन में निरतंता बनी रहती है।

1. कार्तिक मास के गीतः– उठती सी बरिआं मैने अलकस आवै

चा चलदी न बाट सुहावै

री–सो हर की प्यारी

नित उठ गंगा जी मैं न्हाणा,

राम अर लिछमन दसरथ के बेटे,

दोने बन मैं जा, हेरी मन्नै राह मिले भगवान

कार्तिक मास के गीतों में एक वो धार्मिक आधार जुड़ा हुआ है जिससे लड़कियां सुबह 4 बजे उठकर तालाबों आदि में स्नान करने जाती, पितरों व भगवान की पूजा अर्चना करती है ताकि परिवार में सुख–शांति बनी रहे ऐसी मान्यता है। दूसरा हरियाणा कृषि आधारित प्रदेश है। इस मास में ज्वार, बाजरे की फसल कटाउ आ जाती है और इससे दिनचर्या निरंतर बनी रहती है। सभी जल्दी उठ कर खेतों में कार्य के लिए चले जाते है, सभी जल्दी उठकर खेतों में काम के लिए चले जाते है,

फागुन के गीतः– बूढ़ी ऐ लुगाई म भस्तावै फागण में

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

कहियों ऐ उस ससुरै मैरे ने
काच्ची इमली गदराई फागण में।
होली खेल रहे नन्दलाल गोकुल की कुन्ज गली में
उसने भरके पिचकारी माथे उपर मोरी मेरा टीका कर लाल दिया
फागन आया रंग भरा रे लल्ला।

फाल्गुन मास में रबी की फसल कट जाती है और प्रकृति की प्राकृतिक रूप से नवजीवन का संचार होता है। प्रकृति के नवयोजन रूप की खुशी फागुन के गीतों में दिखाई देती हैं।

दिनचर्या के गीतः–

पनघट के गीतः– 1. सासू पनियां कै जैसे जाऊँ, रसीले दोऊँ नैना।
2. मेरे सिंर बंटा टोकना मेरे हाथ मे झनू डोल

चक्की के गीतः– मैं तो माड़ी हो राम
धंधा क घर के इस घर का
बखते उठ कै पीसण्य पींसू
सुबह पहर के तडके

हाली का गीतः– साग बनाया हेरी गोभी का फूल मंगा कै
मंडे पोये हेरी बेलण दाब लगा के

खान–पान तथाः– देसा मैं देस हरियाणा
जित दूध–दही का खाना।

काला दामन काटे चक्कर काटै
जमफ्र करै कमाल मेरा
मारूंगी हरिया रूमाल मेरा

प्रेम के गीतः– झिल मिल साफा बांध दिखे री दिल्ली में भरती हो लिया
छुट्टी आया री भरतार दिखे री मेरा ठंड़ा का धालंजा हो गया।
कोठे चढ़ ललकारू देखों मेरा दामन लाइये
गल का लाइओं तवीज नजर का तागा लाईये

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

कृषि के गीतः– मेरा जेठ ने बोआ गेहू बाजरा सरसम एं

बांध गोपियां खेतां रही घमाए

– ईख नलाई के फल पाई

ईख नलाई मन्ने के गठी धड़ाई

बहन–भाई का गीत– पाणी लेवण जा रही, आया पाया ए मेरा याणा सा बिरणियां।

देवर भाभी– भोर मिठाई ल्याया देवरिया, तेरी करू बड़ाई ओ मेरा प्यारा देवरिया

'भाभी मेरा ब्याह करवा दे मेरा खातर बहु ल्यादे'

ननद–भाभी– मेरा दामण धरा री तकियाले में हेरी हेरी नन्द पकडा जाईये

सांस–बहु– मेरी सांस ने बाराह जाए, एक जाम दिया बोना ए

– आपणे सुसर के आगे में क्यूकर चालेगी, मै लाम्बा घुंघट काड मटक के चालूगी।

संस्कार के गीतः–

जच्चा का गीतः– जच्चा की जीभ चटोरी दूध–माई मांगे से हे।

पुत्र जन्म संगीत– गौरिये के चाचा के छोरा होया हांसु

गौरिये के चाचा, न्यू नाचू, न्यू नाचू गौरिये के चाचा

विवाह के गीतः– में पहले मंगल गीत गाये जाते है जिनमें देवी–देवताओं की पूजा की जाती है जैसेः–

पांच बता से लोगां का जोडा ले देवी ज्याईयों जी

जिस डाली म्टारी देवी बैव्यी वाली डाली झुक ज्याइयों जी

इसमें बना–बनी के गीत गाए जाते है।

बन्नी की गीतः–

कण्ठ चुबारे खड़ी म्हारी लाडो के तरे गहना थोड़ा सै

ना माँ मेरी गहना थोड़ा राजा का लड़का का वाला सै।

दादा दूर ज्यादा परदेस ज्याईयै, मारी ज्योड़ी का वर ढुंढि सै।

बन्ने का गीतः–

तांता पानी से समुदरा का रो पोता न्हाइयों ऐ म्हारे गोकल का।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

बन्ना म्हारा बन्नी मांगी रे। वो बन्नी गेल मांगी रे। साली भी मांगे री

1. भात का गीतः– मेरा जेठानी के पांच भाई मेरे तो माँ जाया एक
2. भेली और चावल ले भात नौतने आई रै, तूतो रे बीरां गया खेत में भावज भी–ना पाई रे।

बारात आने का गीतः– बाजा ऐ नगाड़ी रणजीत का, म्हारे ब्यावन आए।

फेरां का गीतः– 1. गढ छोड रूकमन बारह आई, मढप ता छाई म्हौर आंगना

3. पहल्या फेरा लिजिए दादा की पोती।

कन्या विदाई का गीतः– 1. से साथण चाल पड़ी मेरे ढब–ढब भर आऐ नैन

2. तेरा पनघट सूना होय, बाबुल तेरी धीय बिना, मेरी बहुआ मरेंगी से लाड़ो बेटी जाय घर।

वधु आगमन का गीतः– 1. डोले तै तलै उतरिया ऐ बहुअड करके नीची नाड़, सासू जी, के पास लिये सै लिये चरन चुचकार

कांगना जुआ का गीतः– खोले उतणी की कागंना, तेरी माए बाहण का भागना, खोल रानी के डारियां तेरी माँ बाहन गोरियां

बधाई के गीतः– फूलां की छाई नी बाहर बधाई होये

थारे घर आई नई नवेली नार बधाई होय।

सहाग रात के गीत– मत छेड बलम मेरे चुंदड ने हो जागी तकरार जले

मृत्यु के गीतः– हाए–हाए र केला तोड लिया

हाए–हाए बागां कोल किसने तेरी बांथी पाल की बागां कोल

बाम्मै बातली कोतरी दहणे बोल्या काग घबरू भोर जवान हाए–ए गया सेर जुआन

हरियाणवी लोक गीतों को सुनकर हरियाणवी संस्कृति जीवंत चित्र मानस पटल पर सहज ही आ जाते है। लोक गीतों जन्म से लेकर मृत्यु तक के हर पल, हर रिति–रिवाज हर एक संस्कार के रंग देखने को मिलते हैं। समाज की सबसे छोटी ईकाई परिवार में उस परिवार के हर रिश्ते के हंसी खुशी व्यवहार आचार विचार के

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

दर्शन लोक गीतों में है। तीज त्योहार, ऋतु पूजा–अर्चना देवी देवताओं की सभी तरह के संस्कृति को रूप देखने को मिलते है।

1. (लोकगीतों का बुगचा, संकलन सम्पादक सम्मेलन निर्मल पृ0 12, वाणी प्रकाशन प्रथम स) पृ0 सं0 – 238 , 239
2. पृ0 5, वही
3. पृ0 238, 239, वही
4. पृ0 सं0 144 लोक गीतों का बगुचा पृष्ठ सं0 212
5. हरियाणा के लोक गीत, सम्पादक डा0 साधु राम भारदा, प्रकाशक हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला पृ0 215 संस्करण 1970
6. पृ0 संख्या 215, वही